8

सिद्ध बनो, कौन मैं?

(मत्ती 5:43-48)

मत्ती 5:17-20 में यीशु ने कहा कि वह व्यवस्था को पूरा करने आया। अन्य बातों के साथ वह *व्यवस्था* के उद्देश्य को पूरा करने यानी यह दिखाने आया कि परमेश्वर अपनी सन्तान को कैसे लोग देखना चाहता है। फिर यीशु ने कई उदाहरण बताए कि उसके मन में क्या था। उन उदाहरणों में ठहराया गया यीशु का मानक संसार के मानक से आज भी अलग है। यह शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा बताए जाने वाले मानक से भी ऊपर था (आयत 20)। यीशु के अन्तिम उदाहरण का अध्ययन करने से पहले पिछले उदाहरणों पर फिर से विचार करना अच्छा हो सकता है। मेरे भाई कोय ने इसे इस प्रकार से संक्षिप्त किया है:[1]

1. संसार कहता है, ''यदि परिस्थितियों की मांग हो और तुम पीछा छुड़ा सकते हो तो हत्या कर दो।''
   फरीसियों का कहना था, ''हत्या न करो।''
   यीशु ने कहा, ''क्रोध भी न करो।''
2. संसार कहता है, ''व्यभिचार करने में कोई बुराई नहीं।''
   फरीसियों का कहना था, ''व्यभिचार न करो।''
   यीशु ने कहा, ''किसी स्त्री को कामुक नज़र से न देखो।''
3. संसार कहता है, ''तलाक किसी भी कारण से सही है।''
   फरीसियों का कहना था, ''जब तुम अपनी पत्नी को तलाक दे दो तो उसे तलाकनामा लिखकर दो।''
   यीशु ने कहा, ''व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को तलाक न दो।''
4. संसार कहता है, ''झूठ बोलने में कोई बुराई नहीं है।''
   फरीसियों का कहना था, ''जब तुम शपथ खाते हो तो सच ही बोलना।''
   यीशु ने कहा, ''हर हाल में सच बोलना।''
5. संसार कहता है, ''पहले मारो, या दूसरों को उससे अधिक हानि पहुंचाओ जितनी वे तुम्हें पहुंचाते हैं।''
   फरीसियों का कहना था, ''तुम बदला ले सकते हो पर उतना ही जितना तुम्हें नुकसान हुआ है।''
   यीशु ने कहा, ''अपना बदला न लेना; व्यक्तिगत बदला नहीं होना चाहिए।''

यह हमें 43 से 48 आयतों में ले आता है। यहां पर कोय ने इस वचन को इस प्रकार संक्षिप्त किया:

6. संसार कहता है, ''तुम्हें प्रेम की कोई आवश्यकता नहीं; प्रेम तो निर्बल लोगों के लिए है।''

   फरीसियों का कहना था, ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखो और अपने शत्रुओं से घृणा।''

   यीशु ने कहा, ''अपने शत्रुओं से प्रेम करो।''

43 से 48 आयतें पिछले उदाहरण से बड़ी नज़दीकी से जुड़ी हैं। दोनों का सम्बन्ध दुर्व्यवहार किए जाने वाले हमारे जवाब के ढंग से है। 38 से 39 आयतें मूलतया यह ज़ोर देती हैं कि हमें क्या *नहीं* करना चाहिए; हमें बदला नहीं लेना चाहिए। परन्तु हम नकारात्मक के साथ रुक जाने का साहस नहीं करते। 43 से 48 आयतें हमें बताती हैं कि हमें क्या करना *चाहिए:* हमें उनसे, जो हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं प्रेम रखना और उनकी सहायता करने का तरीका ढूंढ़ना चाहिए। अगस्टिन ने लिखा है, ''कइयों ने यह तो सीख लिया है कि दूसरा गाल कैसे देना है, परन्तु वे यह नहीं जानते कि जिसने उसे मारा है, उससे प्रेम कैसे करें।''[2]

अपने वचन पाठ के अन्त में हमें यह चौंकाने वाली चुनौती मिलती है: ''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है'' (आयत 48)। क्या मुझे घबराहट की स्वर सुनाई देता है? ''सिद्ध बनो? कौन, मैं?'' हम परमेश्वर की तरह सिद्ध कैसे बन सकते हैं? हम पाठ के पूरा होने से पहले इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की उम्मीद करते हैं।

आवश्यकता (5:43, 44)

जो उन्होंने सुना था (आयत 43)

हमारा वचन पाठ यीशु के इन शब्दों के साथ आरम्भ होता है: ''तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर'' (आयत 43)। आपको यह आज्ञा याद आ गई होगी कि ''तू अपने पड़ोसी से प्रेम रखना।'' यह लैव्यव्यवस्था 19:18 से लिया गया हवाला है। यीशु ने इन शब्दों को दूसरी सबसे बड़ी आज्ञा कहा (मत्ती 22:39; देखें आयतें 35-40)।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में इस आज्ञा के बिल्कुल साथ साथी यहूदियों से प्रेम करने का निर्देश है। इससे पहले आयत कहती है, ''अपने मन में एक-दूसरे के प्रति बैर न रखना'' (19:17क); और आयत 18 का पहला भाग कहता है, ''पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना।'' यहूदी लोगों ने इस आज्ञा का अर्थ यह ले लिया कि उन्हें केवल दूसरे इस्राएलियों से प्रेम रखना आवश्यक है।[3] (इसके विपरीत यीशु ने बाद में स्पष्ट किया कि ''पड़ोसी'' शब्द में कोई भी हो सकता है जिसे सहायता की आवश्यकता हो [लूका 10:29-37]।)

मत्ती 5:43 का दूसरा भाग, ''और अपने बैरी से बैर'' पुराने नियम में नहीं मिलता। यहूदियों ने भजन पर आधारित इस सोच को, जो परमेश्वर से इस्राएल के शत्रुओं से भयानक काम करने का आग्रह करता है, सही ठहराया हो सकता है[4] (उदाहरण के लिए देखें भजन संहिता 69:22-28)। उन्होंने उन आयतों की ओर भी ध्यान दिया हो सकता है, जो इस्राएलियों को अपने आस पाड़ोस की जातियों से अपने आपको अलग रखने का निर्देश देती हैं (देखें यशायाह 52:10,

11)। बेशक अन्य आयतें उन्हें अपने शत्रुओं की सहायता करने को कहती थीं[5] (उदाहरण के लिए नीतिवचन 25:21, 22 [देखें रोमियों 12:20])। तौभी यहूदियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि अपने शत्रुओं से घृणा करना न केवल उनका अधिकार बल्कि ज़िम्मेदारी भी है। कुमरान के[6] *मैनुअल ऑफ़ डिसिप्लिन* में यह परामर्श दिया गया: ''... हर किसी से जिसे परमेश्वर ने चुना है, प्रेम रखना, और हर किसी से जिसे उसने ठुकराया है, घृणा करना ... अन्धकार के सब पुत्रों से घृणा करना।''[7]

जो यीशु ने कहा (आयत 44क)

यीशु ने आगे कहा, ''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो'' (आयत 44क)। हमारे लिए यह समझना कि ये शब्द यीशु के कई सुनने वालों के लिए कितने चौंकाने वाले, बल्कि ठोकर दिलाने वाले होंगे, कठिन है। जब हम ''बैर'' शब्द सुनते हैं तो हमें उन लोगों का ध्यान आ सकता है जो हमें पसन्द नहीं करते, और शायद जिन्होंने हमारे बारे में कुछ गलत बोला होगा। जब कोई यहूदी ''बैरी'' शब्द को सुनता तो उसे उन लोगों का ध्यान आता था जिन्होंने उसके लोगों को सताया था, जिसमें वे भी शामिल थे, जिन्होंने खतना जैसे पवित्र रीतियों संस्कारों को छोड़ने से इनकार करने के कारण यहूदियों को मार डाला था।[8] यीशु को सुनने वालों में नि:संदेह वे लोग भी होंगे जो उसी दिन के लिए जीवित थे जब वे रोमी लहू बहकाएंगे और उस घृणित काबिज सेना को फलस्तीन से निकाल देंगे। यीशु की आज्ञा उनके लिए कितनी ''कठिन बात''[9] होगी! यीशु का यह आदेश आज भी कइयों के लिए ''कठिन बात'' है। उन से जो हम से प्रेम करते हैं, प्रेम करना कठिन नहीं है, पर अपने शत्रुओं से प्रेम करने की चुनौती से हमें अपनी आत्मिक गहराई को मापने का अवसर मिल जाता है। किसी ने इसे ''प्रेम की अग्नि परीक्षा'' कहा है।

शायद मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि यीशु की मंशा अपने शत्रुओं के पास लौट जाने की चाल बनाने के लिए नहीं थी। ऑस्कर वाइल्ड ने कहा है, ''अपने शत्रुओं से प्रेम करो।'' उन्हें यह समझने की कोशिश करने के लिए कि आप क्या चाहते हैं वे पागल हो जाएंगे।[10] यीशु ने यह नहीं चाहा कि हम अपने शत्रुओं को ''पागल'' कर दें। उसकी इच्छा थी कि हम उनके निकट, अपने निकट और प्रभु के निकट आएं। एल. फ्रैड प्लम्मर ने लिखा है, ''भलाई के बदले बुराई देना शैतानी काम है; भलाई के बदले भलाई देना मानवीय काम; और बुराई के बदले भलाई देना ईश्वरीय काम है।''[11]

यह हमें इस प्रश्न पर ले आता है कि यह कहने का यीशु का क्या अर्थ था कि ''अपने बैरियों से प्रेम रखो''? ''प्रेम'' के लिए कई यूनानी शब्द हैं। एक शब्द *phileo* है जिसका अर्थ स्नेही, अपनेपन का प्रेम यानी ऐसा प्रेम जो हम नज़दीकी दोस्तों से रखते हैं। हमारे वचन पाठ में इस शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ है। किसी ने कहा है, ''हमें अपने शत्रुओं को *पसन्द* करने की आज्ञा नहीं है, पर हमें उन से *प्रेम* करने की आज्ञा है।'' मत्ती 5:44 में ''प्रेम'' के लिए शब्द *agapao* है।[12] *Agapao* प्रेम में इच्छा समिलित है। यह भावना से रहित नहीं है, पर यह भावना पर निर्भर भी नहीं है। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने सुझाव दिया है कि ''सच्चा प्रेम उतना भावना नहीं जितना सेवा।''[13] *Agapao* की परिभाषा ''प्रियजनों के लिए सबसे बेहतरी की तलाश'' के

रूप में की गई है।

रोमियों 12 में पौलुस ने शत्रुओं के लिए ''बेहतरीन की तलाश'' में शामिल बातों के उदाहरण दिए: ''परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला, यदि प्यासा हो तो उसे पानी पिला'' (आयत 20क [देखें नीतिवचन 25:21])। प्रेम कहता है कि हमें यह तय करने की कोशिश करना कि हमारे शत्रु की आवश्यकता क्या है और फिर उन आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक है। मैदानी उपदेश में, यीशु के ''अपने बैरियों से प्रेम रखो'' कहने का उसका क्या अर्थ था:

> परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो। जो तुम्हें श्राप दें, उन को आशीष दो: जो तुम्हारा अपमान करें, उन के लिए प्रार्थना करो। ... वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो[14] (लूका 6:27, 28, 35क)।

यदि हमारे बैरी हम से सहायता लेने से इनकार कर दें तो? एक बात हम उनके लिए कर सकते हैं, जिससे वे इनकार नहीं कर सकते और वह उनके लिए *प्रार्थना* करना है। यह कहने के बाद कि ''अपने बैरियों से प्रेम रखो'' यीशु ने कहा, ''और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो'' (मत्ती 5:44ख)। क्रूस पर, यीशु ने अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना की (लूका 23:34)। पहले मसीही शहीद स्तिफनुस ने अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना की कि ''हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!'' (प्रेरितों 7:60)। प्रेम और प्रार्थना दोनों साथ-साथ चलते हैं। यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो आप उसके लिए प्रार्थना करेंगे। फिर यदि आप उसके लिए प्रार्थना करते हैं, तो उसके लिए आपका प्रेम बढ़ेगा। शत्रु के लिए निरन्तर प्रार्थना आपके मन में से घृणा को निकाल देगी।

कारण (5:45-47)

परमेश्वर जैसे बनना (आयत 45)

यीशु ने दो कारण बताए कि हमें अपने बैरियों से प्रेम क्यों करना चाहिए। पहला कारण परमेश्वर के जैसे बनना है: ''जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे'' (आयत 45 क)। ''अपने पिता की सन्तान'' वाक्यांश का अर्थ है ''अपने पिता के स्वभाव वाले होना।'' जब हम परमेश्वर के शत्रु भी थे, तब भी उसने प्रेम किया और हमारे लिए मरने को अपने पुत्र को भेज दिया (रोमियों 5:8, 10)। अब हमें परमेश्वर जैसे बनने और अपने बैरियों से प्रेम करने की चुनौती दी जाती है। कई बार लोग किसी छोटे बच्चे को देखकर कहते हैं ''वह अपने पिता के जैसा दिखता है।'' लोग जब हमें देखते हैं तो क्या उन्हें मुझ में अपने स्वर्गीय पिता के परिवार की कुछ झलक दिखाई देती है?

यीशु ने सब लोगों के लिए जिसमें उसके शत्रु भी हैं, परमेश्वर के प्रेम के दो उदाहरण दिए: ''जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे। क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य[15] उदय करता है और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है'' (मत्ती 5:45ख)। धूप और बारिश दोनों सामान्य बातें हैं, यानी रोज़ की बातें हैं जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। बेल

हार्टमैन ने उन्हें ''परमेश्वर के विजुअल एड्स'' कहा है। उसने कहा ''सुबह जब सूर्य निकलता है तो कहता है, 'मेरे पिता ने यह किया!' अगली बार बारिश होती है तो कहती है, 'मेरे पिता ने यह किया!' ''[16] यीशु के कहने का अर्थ था कि परमेश्वर यह दान केवल भले और धर्मी लोगों पर ही नहीं देता है। वह बुरे और अधर्मी लोगों पर भी ये दान देता है, या यूं कहें कि वह अपने बैरियों को भी धूप और बारिश देता है। वह लोगों को वह देता है जिसकी उन्हें आवश्यकता है, न कि वह जिसके वे हक्कदार हैं।[17] हार्टमैन ने लिखा है, ''सूर्य आज निकला, हमारी किसी भलाई के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की भलाई के कारण।''[18]

दुष्टों के जैसे न बनना (आयतें 46, 47)

अपने बैरियों से प्रेम करने का पहला कारण परमेश्वर *जैसे* बनना है। दूसरा कारण दुष्टों जैसे *न बनना* है। यीशु ने कहा, ''क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा? क्या महसूल लेने वाले[19] भी ऐसा ही नहीं करते? यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति[20] भी ऐसा नहीं करते?'' (आयतें 46, 47)।

यीशु ने दो गुटों की बात की जिन्हें यहूदियों द्वारा तुच्छ माना जाता था। इन्हें अन्यजाति (गैर यहूदी) और महसूल लेने वाले कहा जाता था। महसूल लेने वाले लोग यहूदी ही थे जो रोमी सरकार के लिए कर एकत्र करते थे। उनके साथी यहूदी उन्हें देशद्रोही मानते थे। आमतौर पर केवल नीच से नीच लोग ही इस काम को करने को तैयार होते थे। उनके काम में बेईमानी करना आम था (देखें लूका 3:12, 13; 19:2)। लोगों के दिमाग में महसूल लेने वाले लोग सबसे बुरे यानी वेश्याओं और काफिरों के स्तर पर थे (देखें मत्ती 9:11; 18:17; 21:31)।

मुझे यह ध्यान दिलाना चाहिए कि यीशु के महसूल लेने वालों और अन्यजातियों की बात करना उसके द्वारा उनके व्यक्तिगत अवलोकन को नहीं दिखाता। यीशु सब लोगों से प्रेम रखता था क्योंकि वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया (लूका 19:10)। उसे महसूल लेने वालों का यार माना जाता था (मत्ती 11:19)। पहाड़ी उपदेश को लिखने वाला व्यक्ति पूर्व महसूल लेने वाला ही तो था [देखें मत्ती 9:9-13]। यीशु के प्रेम में अन्यजाति लोग भी थे (देखें मत्ती 8:5-11; 28:18-20; लूका 2:25, 32)। तो फिर अपने उदाहरण में उसने महसूल लेने वालों और अन्य जातियों का इस्तेमाल क्यों किया? क्योंकि उसके सुनने वालों की *बात थी,* वे मनुष्य जाति के निम्नतम रूप थे।[21] मत्ती 5:20 में यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उनकी धार्मिकता उन लोगों की धार्मिकता से जिन्हें वे समाज के *सबसे ऊपर* मानते थे, यानी ग्रंथियों और फरीसियों से बढ़कर होनी चाहिए। अब एक अर्थ में उसने कहा कि ''क्या तुम्हारी धार्मिकता उन से बढ़कर है जिन्हें तुम *निम्नतम स्तर* वाले मानते हो, यानी महसूल लेने वालों और अन्यजातियों से?''

यीशु ने ध्यान दिलाया कि महसूल लेने वाले भी उन से प्रेम रखते हैं, जो उन से प्रेम रखते हैं। यकीनन वे समाज से बहिष्कृत लोगों के रूप में अपनी माताओं से प्रेम रखते थे, वे अपने साथी महसूल लेने वालों को भाई मानते थे (देखें मत्ती 9:10; मरकुस 2:15)। इसके अलावा अन्यजाति भी उन्हीं को नमस्कार करते थे, जिनके साथ उनके अच्छे सम्बन्ध होते थे। नमस्कार

करने का तरीका हर एक का अलग-अलग होता है। यह ''हैलो'' या ''क्या हाल चाल है?'' हो सकता है। यह हाथ मिलाना या गले लगना हो सकता है। यह तरीका हाथ जोड़कर आदर के साथ झुकना या गाल पर प्रेम से चुम्बन करना भी हो सकता है। हर समाज में अपनी सामाजिक रीतियां होती हैं जो अभिवादन करने का उनका अपना तरीका है। क्या हम हर किसी को इस प्रकार का नमस्कार करते हैं या केवल अपने ''भाइयों'' को, या अपने दायरे के लोगों को?

47 और 48 आयतें मेरी चिन्ता बढ़ा देती हैं। मुझे मानना पड़ेगा कि मेरे अधिकतर सम्बन्ध आपसी हैं। कोई मुझे पसन्द करता है और मैं उसे पसन्द करता हूं। कोई मुझ से ''हैलो'' कहता है और जवाब में मैं भी उसे ''हैलो'' कहता हूं। कोई मुझे अपने घर में बुलाता है और मैं उसे अपने घर में बुलाता हूं। कोई मुझे उपहार देता है और बदले में मैं भी उसे उपहार देता हूं। मुझे यीशु के बार-बार मन में आने वाले शब्द सुनाई देते हैं: ''क्या [दुष्ट लोग] भी ऐसा ही नहीं करते?''

मुझे, और आपको, यीशु की चुनौती ''दूसरों से ... बढ़कर'' करने की है। यह ''बढ़कर'' हमें गैर मसीही लोगों से अलग करता है। जो बात हमें अलग करती है वह यह नहीं कि हम उन से प्रेम करते हैं जो हम से प्रेम रखते हैं, बल्कि यह है कि हम उन से भी प्रेम करते हैं जो हम से प्रेम *नहीं* करते। ऐसा करते हुए हम दुष्टों जैसे कम और अपने स्वर्गीय पिता जैसे अधिक बन रहे होते हैं।

परिणाम (5:48)

यह हमें आयत 48 के चौंकाने वाले शब्दों पर ले आता है। कई लेखक इस पहाड़ी उपदेश में इस आयत को मुख्य वचन मानते हैं: ''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।'' पहली बार पढ़ने पर यीशु की चुनौती असम्भव प्रतीत होती है। हम परमेश्वर की तरह सिद्ध कैसे बन सकते हैं? इन शब्दों का क्या अर्थ है?

इसका अर्थ क्या *नहीं* है।

क्या यीशु की बात यह सुझाव देती है कि इस जीवन में पाप रहित सिद्धता की किस स्थिति में पहुंचा जा सकता है। कइयों का मानना ऐसा ही है। मैं एक आदमी से मिला था जो यह ज़ोर देता था कि उसने कई साल पाप नहीं किया। मत्ती 5:48 का यह विचार एक और जगह बाइबल की शिक्षा का वर्णन करता है। 1 यूहन्ना में प्रेरित ने लिखा है, ''यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं: और हममें सत्य नहीं'' (1:8); ''यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है'' (1:10)। यदि आपको लगता है कि आपने पाप रहित सिद्धता की यह स्थिति पा ली है तो यह इस बात का पक्का प्रमाण है कि आपने नहीं पाई है।[22] जो व्यक्ति पापरहित होने का दावा करता है वह पाप को ''उससे गम्भीर मानने से जितना यह है''[23] फिर से परिभाषित करने यानी उसका फिर से वर्गीकरण करने को विवश है।

इसका क्या अर्थ है

यदि आयत 48 का अर्थ यह नहीं है कि पापरहित सिद्धता की स्थिति को पाया जा सकता

है, तो फिर इसका क्या अर्थ है? इस आयत को समझने की कुंजी अनुवादित शब्द ''सिद्ध'' (*teleios*) का अर्थ है। इस शब्द का अर्थ ''लक्ष्य या उद्देश्य को पाना ... सम्पूर्ण, पूरा।''[24] संदर्भ में परमेश्वर का प्रेम ''सिद्ध'' या ''पूरा'' है क्योंकि यह *हर किसी* में यानी ''भले और बुरे'' और ''धर्मी और अधर्मी'' दोनों में जाता है। आपको और मुझे इस अर्थ में ''सिद्ध'' बनने की भी चुनौती दी गई है कि हमारा प्रेम सबसे के लिए हो। दोस्त हो या दुश्मन हमें ''सब के साथ भलाई'' करनी चाहिए (गलातियों 6:10)।

मत्ती 5:48 का मुख्य ज़ोर यही है, पर इस आयत की चुनौती को उसी तक सीमित नहीं किया जा सकता।[25] पुराना और नया दोनों नियम अपने पिता की तरह बनने का आदर करते हैं।

> ''क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूं। क्योंकि मैं वह यहोवा हूं जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिए निकाल ले आया हूं कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूं; इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (लैव्यव्यवस्था 11:44, 45)।
>
> ''इसलिए प्रिय, बालको की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो'' (इफिसियों 5:1)।

परमेश्वर की सन्तान के रूप में हमारी चुनौती अपने पिता जैसे बनने की है। अनुवादित शब्द ''सिद्ध'' की परिभाषा के पहले भाग को फिर से देखें: ''लक्ष्य या उद्देश्य को पाना।'' जीवन में हमारा उद्देश्य क्या है? अपने पिता की महिमा करना (देखें मत्ती 5:16)। उसकी महिमा हम अपनी ओर से उसके जैसे बनकर करते हैं। विलियम बार्कले ने उदाहरण के रूप में एक पेचकस का सुझाव दिया है।[26] मान लें कि किसी फर्नीचर में कोई पेंच ढीला हो गया है। आप अपने टूलबॉक्स में से उस पेचकस को ढूंढ़ते हैं, जो उसके लिए आवश्यक है। टूल हो सकता है कि नया न हो; या हो सकता है कि इसमें कुछ खरोचें आई हों। पर उसकी हत्थी आपके हाथ में आ जाती है और उसका सिरा पेच की टोपी में बनी दरार में फिट हो जाता है। आप पेचकस को घुमाते हैं और ढीला पेच कसा जाता है। बाइबली अर्थ में, अपनी कमियों के बावजूद, वह पेचकस ''सिद्ध'' है क्योंकि यह अपने उद्देश्य को पूरा करता है। इसी प्रकार से ''अपनी सारी कमियों के बावजूद आप और मैं अपनी ओर से और परमेश्वर जैसे बनने की कोशिश करते हुए अपने उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं।''

इस जीवन में हमें परमेश्वर जैसे पूर्ण रूप से बनने का बड़ा लक्ष्य कभी नहीं मिल सकता, पर हमें कोशिश करनी आवश्यक है। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है:

> मनुष्यों के लिए इस सिद्धता को पाना असम्भव ... है; फिर भी इससे कम कोई भी बात उससे कम होगी, जो हमें बनना चाहिए। मनुष्य इतना पा नहीं सकता [*sic*]; क्योंकि कम मांगने का अर्थ उस से संतुष्ट हो जाना है जो अपूर्ण है, यह परमेश्वर के स्वभाव से मेल नहीं खाएगा। इसकी मांग करने का अर्थ मनुष्य को अपनी कमी को याद दिलाते रहना और इसके साथ ही उसे अपने आदर्श के निकट पहुंचने के लिए सदा संघर्ष करते रहना है।[27]

''मनुष्य को अपनी कमी को याद दिलाते रहना'' शब्दों में मैं और जोड़ूंगा ''और उसे

परमेश्वर के अनुग्रह और कृपा की अपनी आवश्यकता को याद कराते रहना'' है।

सारांश

बाइबल इस शब्द को उस दर्पण से मिलाती है जिसमें हम अपने आपको देखते हैं (याकूब 1:23)। मुझे दर्पण पसन्द नहीं है। जैसे-जैसे मैं बूढ़ा हो रहा हूं मुझे आईना में देखना अच्छा नहीं लगता। अपने बाथरूम के आईने में देखना यदि मुझे बेचैन कर देता है तो यह समझने के लिए कि मैं वह नहीं हूं जो मुझे होना चाहिए वचन के आईने में देखना बेचैन कर देता है!

> ''... अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो'' (मत्ती 5:44)।
>
> ''क्योंकि, यदि तुम [केवल] अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा?'' (आयत 46क)।
>
> ''इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है'' (आयत 48)।

''हे परमेश्वर, सब लोगों से, यहां तक कि जो हमारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं उन से भी प्रेम रखने में हमारी सहायता करे। हे परमेश्वर, हमें अपने जैसे और अधिक बनने में सहायता कर!''

टिप्पणियां

[1]ट्रेन्ट, टैक्सस, 8 जनवरी, 2006 को दिया गया प्रवचन कोय रोपर, ''हाऊ टू लिव इन ए सिनफुल वर्ल्ड।'' [2]अगस्टिन *अवर लार्ड'स सरमन्स ऑन द माउंट* 1.19.58. [3]परन्तु ध्यान दें कि वही अध्याय परोपकार को ''परदेसियों'' (गैर यहूदियों) से जोड़ता है (लैव्यव्यवस्था 19:33, 34)। [4]इन भजनों को ''अभिशाप के भजन'' कहा जाता है। [5]देखें निर्गमन 23:4, 5; नीतिवचन 24:17. [6]कुमरान का समुदाय ऐसेनियों के दल के गुट का भाग था। कुमरान समुदाय के सदस्य मृत सागर के निकट रहते थे। उन्हें मृत सागर में मिली पत्रियों के लिए अधिक प्रसिद्ध मिली है। [7]स्क्रोल 1 क्यूएस 1.4, 10; डेविड हिल, *दि गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 129 में उद्धृत। [8]1 मक्काबियों, दोनों नियमों के बीच के काल में लिखी गई परमेश्वर की प्रेरणा रहित पुस्तक, इस प्रकार के जातिय दमन की बात करती है। [9]यह शब्दावली यूहन्ना 6:60 (KJV) से ली गई। [10]''पर्ल्स बिफोर पिग्स: वर्ड्स ऑफ़ विज़्डम एण्ड प्लेजेंटरी'' (http://home.no.net/krrakvag/pearlsf2.htm; इंटरनेट; पर 12 जून 2008 को देखा गया)।

[11]एल्फ्रेड प्लमर, *एन एक्जेटिकल कमैंट्री ऑन द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (लंदन: इलियट स्टॉक, 1910), 89. [12]*Agapao* हमारे वचन पाठ के 43 और 46 आयतों में ''प्रेम'' के लिए भी इस्तेमाल किया गया है। [13]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ द सरमन ऑन द माउंट,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1978), 118. [14]लूका 6:27, 28 से मिलती-जुलती शब्दावली KJV में मत्ती 5:44 में मिलती है। अति प्राचीन हस्तलिपियों में मत्ती 5:44 में यह शब्दावली नहीं है, पर लूका रचित सुसमाचार यह स्पष्ट कर देता है कि ''अपने बैरियों से प्रेम रखो'' कहने के समय यीशु के मन में यही था। [15]''*अपना सूर्य*'' वाक्यांश पर ध्यान दें। सूर्य को परमेश्वर द्वारा बनाया गया और उसकी का है। [16]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 18 जून 2006 को दिया गया प्रवचन। [17]कइयों ने विश्वव्यापी उद्धार की शिक्षा देने के लिए आयत 45 का इस्तेमाल करने की कोशिश की है, पर पहाड़ी उपदेश उस शिक्षा का खण्डन करता है (देखें मत्ती 7:13, 14)। थियोलॉजियन परमेश्वर को सामान्य अनुग्रह (जो सब मनुष्यों को दिया जाता है) और परमेश्वर

के उद्धार देने वाले अनुग्रह (जो केवल उद्धार पाए हुओं के लिए दिया जाता) की बात करते हैं। [18]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 25 अक्टूबर 2004 को दिया गया प्रवचन डेल हार्टमैन। [19]KJV में ''पब्लिकन'' है। पब्लिकन शब्द लातीनी भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ पब्लिक कर एकत्र करने के लिए किया जाता है। [20]KJV में यहां ''पब्लिकन'' शब्द को दोहराया गया है। परन्तु पुरानी हस्तलिपयों में अन्यजातियों के लिए लिए यूनानी शब्द है।

[21]मैदानी उपदेश में समानांतर आयतों में यीशु ने केवल ''पापियों'' की बात की (लूका 6:32, 33)। [22]हेरल्ड फाउलर, *मैथ्यू ऐ,* बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जॉप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1968), 318 से लिया गया। [23]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाच्युएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 51. [24]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्क. संशो. और संपा. फ्रैडरिक विलियम डेंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 995. [25]मत्ती 5:48 को कइयों द्वारा प्रवचन की मुख्य आयत माना जाता है। यदि ऐसा है तो यह प्रवचन की सभी चुनौतियों से जुड़ी है, न कि केवल अपने साथ की आयत से। [26]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* अंक 1 संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 177–178 आवश्यक हो तो अपने क्षेत्र में इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्य टूल इस्तेमाल करें। [27]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *दि न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एण्ड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 2006), 61.